श्री पद्मप्रभ (बाड़ा पदमपुरा) चालीसा

रचनाकार - आचार्य गुप्तिनंदी धर्मतीर्थ

दोहा

वीतराग जिनवृष नमू, नमूं पंच परमेश।

देव - शास्त्र - गुरू को नमूं, चौबीसों तीर्थेश।।

पद्मनाथ को नित नमूं, पद्मछवि मन लाय।

पद्मपुरा के पद्म का, चालीसा सुखदाय।।

चौपाई

जय श्री पद्मनाथ सुखकारी, छठवें तीर्थंकर मनहारी।

उनका हम चालीसा गायें, पद्मनाथ सम जिन गुण पायें।। (1)

धरणराज इक्ष्वाकुवंशी, कौशाम्बी नृप काश्यप गोत्री।

उनकी रानी सती सुसीमा, जिनके पुण्य की कोई न सीमा।। (2)

मात सुसीमा उर जिन आये, माघ वदी छठ धन्य बनायें।

कार्तिक कृष्ण त्रयोदश आयी, जन्में पद्मनाथ जिनरायी।। (3)

तीस लाख पूरब वय पाई, धनुष ढाई सौ तन ऊंचाई।

एकछत्र शासन प्रभु पाया, न्याय मार्ग से राज्य चलाया।। (4)

जिनवर ने मुनि दीक्षा पायी, जन्मतिथि तपतिथि कहलायी।

जग ने जन्म तपोत्सव पाया, धनतेरस यह दिन कहलाया।। (5)

चित्रा चैत्र पूर्णिमा चन्दा, पद्म बनें सर्वज्ञ जिनंदा।
समोशरण साढ़े नौ योजन, ईन्द्र धनद करते संयोजन।। (6)

इक सौ दस गणधर नित ध्यायें, अग्रिम वज्रचमर कहलायें।
साढ़े तीन लाख मुनि ध्यायें, साढ़े चार लाख आर्यायें।। (7)

लक्ष कोटि नर - नारी ध्यायें, संख्यातों पशु पाप नशायें।
देवी देव असंख्यों आयें, त्रैकालिक जिन भक्ति रचायें ।। (8)

फागुन कृष्ण चतुर्थी आयी, मोक्ष सिद्धि जिन मधुबन पायी।
कलिकाल हुंडक अब आया, प्रभु तुमने अतिशय दिखलाया।। (9)

जयपुर जिला ग्राम बाड़ा है, पद्मपुरा जिन तीर्थ बड़ा है।
पद्मप्रभु का अतिशय न्यारा, सब संकट से हो छुटकारा ।। (10)

नींव खनन में प्रभु को पाया, भक्तों का पुण्योदय आया।
पद्म चिन्ह लख हर्षित सारे, जय-जय पद्म जिनेश पुकारें।। (11)

कुंथु सूरी गुणसागर आये, पद्म जिनेश बड़े बनवायें।
कनकनंदी सूरीश्वर आये, पंचकल्याणक भव्य करायें।। (12)

वृत्ताकार तीर्थ मनहारी, पद्मनाथ का अतिशय भारी।
जो प्रभु का चालीसा गाये, सब सुख निश्चय वैभव पाये।। (13)

भूत प्रेत बाधा जिसको हो, प्रभुवर की शरणा आता वो।
ज्यों प्रभु का गंधोदक पाये, भूतप्रेत बाधा मिट जाये।। (14)

दुष्ट देव व्यंतर बाधायें, डाकिनि शाकिनि कृत पीड़ायें।
परकृत मंत्र तंत्र दुःखकारी, नाम नशे तुम सब दुःख मारी।। (15)

पृथ्वी में भूकंप उठा हो, आंधी या तूफान बड़ा हो।
या वन में दावानल भारी, नाम आपका संकट हारी।। (16)

जल अति बरसे प्रलय मचाये, या दुर्भिक्ष भयंकर आये।
फैली प्राणांतक बीमारी, नाम प्रभु का सब दुःख हारी।। (17)

वास्तु दोष कृत नाना पीड़ा, या नक्षत्र नवग्रह पीड़ा।।
कैंसर हृदय राज रोगादी, आप नाम नाशे दुःख व्याधी।। (18)

रवि आदि नवग्रह बाधायें, पद्मनाथ निश्चित विनशायें।
उत्तम राजयोग बनवाये, भाग्योदय का योग बनाये।। (19)

धर्मतीर्थ में अतिशय तेरा, यहाँ सूर्य ग्रह बना सुनहरा।
उस पर श्री जिन पद्म विराजे, यक्ष यक्षिणी के संग साजे।। (20)

हे जिन!! तुमसे और न चाहूँ, अपना भव-भव भ्रमण मिटाऊँ।
"गुप्तिनंदी" प्रभु रज को पाये, मोक्ष सिद्ध सुख निश्चय पाये।। (21)

दोहा

चालीसा जिन पद्म का, चालीस दिन कर पाठ।

करो कराओ भक्ति से, दीप धूप के साथ।।

भूत प्रेत बाधा मिटे, और पाप का नाश।

बढ़े भाग्य सुख सम्पदा, बनें धर्ममय श्वांस।।

जाप्य मंत्र

।।ऊँ ह्रीँ श्रीँ क्लीं ऐँ अर्हं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा ।।

(रोज एक माला जाप करें)